मध्य रेखायां (द्वितीया)

	प्रथमा
1. ब्राह्मी	काम
2. माहेश्वरी	क्रोध
3. कैमारी	लोभ
4. वैष्णवी	मोह
5. वाराही	मद
6. इन्द्राणी	मात्सर्य
7. चामुण्डा	पुण्य
8. महालक्ष्मी	पाप

प्रथमा
त्रैलोक्यमोहन चक्र (द्वितीया)

(6)
सर्व रक्षाकर चक्र (10)

सर्वज्ञा देवी	अक्षय
सर्व शक्तिमयी "	अजेय
3. सर्वैश्वर्य दायिनी	लेह्य
4. सर्वज्ञानमयी	चोष्य
5 सर्व व्याधि वि०	रेचक
6 सर्वाधार ०	पूरक
7. सर्व पापहरा "	शोषक
8. सर्वानन्दमय ०	दाहक
9 सर्व रक्षा ०	आप्यायक
10 सर्वेविसन्न ०	?

3 तृतीय
सर्व संक्षोभण चक्र
(8)

1. अनङ्ग कुसुमा	वचन
2. " मेखला	आदान
3. " मदना	गमन
4. " मदनातुरा	विसर्ग
5. " रेखा	आनन्द
6. " वेगिनी	
7. " अनङ्ग कुशा	
8 " मालिनी	

(4)
सर्व सिद्धि प्रदा चक्र (14)
सर्व सौभाग्य दायक चक्र नाडयः

1. सर्व संक्षोभिणी	अलम्बा
2. सर्व विद्राविनी	कुहू
3. सर्वाकर्षिणी	विश्वोदरी
4. सर्व ह्लादिनी	वरुणा
5. सर्व संमोहनी	हस्ति
6. सर्व स्तंभिनी	जिह्वा
7. सर्व जृम्भिणी	यशस्विनी
8. सर्व वशङ्करी	गान्धारी
9. सर्व रंजिनी	पूषा
10. सर्वोन्मादिनी	सरस्वती
11. सर्वार्थ साधिनी	इडा
12. सर्व संपत्ति	विडुला
13 सर्व मन्त्रमयी	सुषुम्ना
14. सर्व द्वन्द्व क्षयङ्करी	?

(7)
सर्व राजवशङ्कर चक्र
(8)

1. वशिनी वाग्देवता	शीत
2. कामेश्वरी "	उष्ण
3. मोदिनी "	सुरत
4. विमला "	दुरव
5. अरुणा	इच्छा
6 जयनी	सत्त्व गुण
7. सर्वेश्वरी	रजो गुण
8. कौलिनी	तमो गुण

(5)
सर्वार्थ साधक चक्र
(10)

1. सर्व सिद्धि प्रदा	प्राण
2. सर्व संपत्प्रदा	अपान
3. सर्व प्रियङ्करी	व्यान
4. सर्व मङ्गलकारिनी	उदान
5 सर्व काम प्रदा	समान
6. सर्व दुरव विमोचिनी	नाग
7 सर्व मृत्यु प्रशमनी	कूर्म्म
8 सर्व विघ्न निवारिणी	कृकल
9 सर्वाङ्ग सुन्दरी	देवदत्त
10 सर्व सौभाग्य दायिनी	धनञ्जय

2
सर्व रोगहर परिपूरक चक्र (16)

2. बहुरूपा कर्षिणी	पृथ्वी
3 अहङ्कार "	आप्य
4 शब्दा "	तेज
4. कालाकर्षिणी	वायो
5 स्पर्शा "	आकाश
7. रसा "	श्रोत्र
8. गन्धा "	त्वक
9. चित्ता "	चक्षु
10 धैर्या "	जिह्वा
11 स्मृत्या "	घ्रान
12. नामा "	वाक
13. बीजा "	पाणि
14. शरीरा "	पाद
15 कृपा	पायू
16. अमृता कर्षिणी आत्मा "	उपस्थ

सर्व सिद्धि प्रदा अष्ट 8

1. धन नाशा	राग
2. आशा	द्वेष
3. अङ्कुशा	अहङ्कार

अहंकार (2)

(1) शुद्ध अहंकार — स्वस्वरूप का अहंकार
(2) अशुद्ध अहंकार — देहादि अनात्म ,,
3 सामन्य अहंकार — देहादिधर्म से रहित केवल मैं ,,
4 विशेष अहंकार — नाम जातिआदिक ,,
(5) मुख्य अहंकार — ultimate will knower ,,
6. अमुख्य अहंकार — searcher for enquiry ,,

नाड़ि और देवता

1. इडा	चंद्र	हरि
2. पिंगला	सूर्य	ब्रह्मा
3. सुषुम्ना	सब	मध्यमा रुद्र
4. गांधारी	दक्षिणनेत्र	ईश्वर
5. हस्तिजिह्व	वामनेत्र	विष्णु
6. पूषा	दक्षिणकर्ण	ईश्वर
7. यशस्विनी	वामकर्ण	ब्रह्मा
8. कुहू	गुदा	पृथ्वी
9. अलंबुषा	मुख	सूर्य
10. शंखिनी	नाभि	चंद्र

अन्तःकरण (4)

(1) मन — Sankalp vikalpa
(2) बुद्धि — discrimination
(3) चित्त
(4) अहंकार

शीत, उष्ण, कोमल कठिन

राग = इष्ट आसक्ति
द्वेष = क्रोध

उपवायु (5)

1. नाग = उद्गार
2. कूर्म = निमेष + उन्मेष
3. कृकल = छींक
4. देवदत्त = जमाई
5. धनंजय = देह पुष्टिक

प्राणादि (5)

1. प्राण
2. अपान
3. व्यान
4. उदान
5. समान

कर्मेन्द्रिय (5)

1. वाक
2. पाणि
3. पाद
4. उपस्थ
5. गुद.

ज्ञानेंद्रिय 5

1. श्रोत्र = श्रद्धा
2. त्वक = मन
3. चक्षु = नेत्र
4. = जिह्वा = चित्त
5. घ्राण = अहंकार

1. आकाश	2 वायु	3 तेज	4 जल	5 पृथ्वी
शब्द	स्पर्श	रूप	रस	गंध
वचन	आदान	गमन	रति	मलत्याग

धातु (7)

1. रस
2. रुधिर
3. मांस
4. मेद (चर्बी)
5. मज्जा (वस
6. अस्थि
7. रेत

(9)

1. श्रोत्र
2. त्वक
3. चक्षु
4. जिह्वा
5. घ्राण
6. मन
7. बुद्धि
8. चित्त
9. अहंकार

1. कुशल
2. अकुशल
3. अव्याकृत

रस (6)

मधुर रस (2) कटुक रस
आम्ल रस (5) कषाय रस
लवण रस (6) तिक्त रस

चौदा इंद्रिय		देवता	विषय
1. श्रोत्र	ज्ञानेंद्रिय 5	दिशा	शब्द
2. त्वचा		वायु	स्पर्श
3. चक्षु		सूर्य	रूप
4. जिह्वा		वरुण	रस
5 घ्राण		अश्विनी कुमार	गंध
6. वाक्	कर्मेंद्रिय 5	अग्नि	वचन
7. पाणि		इंद्र	आदान
8. पाद		वामन जी	गमन
9. उपस्थ		प्रजापति	रति भोग
10. गुद		यम	मल त्याग
11 मन	अंतःकरण 4	चंद्रमा	संकल्पविकल्प
12. बुद्धि		ब्रह्मा	निश्चय
13 चित्त		वासुदेव	चिंतन
14 अहंकार	14	रुद्र	अहंपना

• शीत, उष्ण, कोमल कठिन

पंचवायु	
1. नाग	उद्गार
2. कूर्म	निमेष उन्मेष
3. कृकल	क्षुधा
4. देवदत्त	जमुहाई
5. धनंजय	देहपुष्टि

राग — दृढ आसक्ति
द्वेष — क्रोध

स्थूल भूत	
1. आकाश	शब्द
2. वायु	स्पर्श
3. तेज	रूप
4. जल	रस
5. पृथ्वी	गंध

1. काम - प्राप्त वस्तु की भोग की इच्छा
2. क्रोध - द्वेष
3. लोभ - अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति की इच्छा
4. मोह - शुभ अशुभ को अविवेक
5. मद - गर्व (अहंकार
6. मत्सर - परके उत्कर्ष का असहन

353

धातु

1 — 1. पुण्य, पाप (सूक्ष्म)
2. अन्नका सार (मध्यम)
3. मुक्त अन्नके विभाग
2. रुधिर, मांस
3. मांस
4. मेद श्वेतसार (चर्बी)
5. अस्थिगत स्निग्ध पदार्थ
6. अस्थि.
7. रेत

उपवायू	
(1) नाग	उद्गार
2. कूर्म	निमेष उन्मेष
3. कृकल	छींक
4. देवदत्त	जमुई
(5) धनंजय	देह पुष्टि

359 नाडि

(1)	इडा	(चंद्र)	देवता हरि	वाम नासिकागत
(2)	पिंगला	(सूर्य)	ब्रह्मा	दक्षिण नासिकागत
(3)	सुषुम्णा	मध्यमा	रुद्र	नासिकाके मध्यगत
(4)	गांधारी		ईंद्र	दक्षिण नेत्र
(5)	हस्तिजि ०हो		वरुण	वाम नेत्र
(6)	पूषा		ईश्वर	दक्षिण कर्ण
(7)	यशस्विनी		ब्रह्मा	वामकर्ण
(8)	कुहु	मुख	पृथ्वी	गुदा
9.	अलंबुषा	मेढ्र	सूर्य	मेढ्र
10	शंखिनी	नाभि	चंद्र	नाभि

नास्तिकर्त्तव्या कर्त्तव्यमुपासित व्यानुपासित व्यमिति विकल्प नामनो विलापनं होमः

बाह्याभ्यन्तर करणानां स्वरूप ग्रहण योग्यत्वास्ती त्यावाहनम्

(page 19)

तस्य बाह्याभ्यन्तर करणानामेकरूप विषय ग्रहणम्

आसनम

रक्त शुक्लपदैक किरणम्पाद्यम् उज्वल दामोदानन्दासानन्दनमर्घ्यम्

स्वच्छा स्वतः शक्तिरित्याचमनम्

चिद्वीन्द्रमयी स्नानम्

चिदग्नि स्वरूप परमानन्द शक्ति स्मरणँ वस्त्रम्

प्रत्येकं सप्तविंशति धामिन्नत्वेन इच्छाक्रियात्मक ब्रह्म ग्रन्थिमयीसतन्तु ब्रह्म नाडी ब्रह्म सूत्रम्

स्वातिरिक्तवस्त्रासङ्ग रहितस्मरणँ विभोषणम्

स्वच्छन्द परिपूर्णा स्मरणङ्गन्धः
समस्ततिषयाणाम्मनः स्थैर्य्यणानु सन्धानङ्कुसुमन्ते षामेव सर्व्वदा स्वीकरणन्धूपः

परमकारण भूता शक्ति : केन नव चक्रस्थो देह:
नव चक्र शक्तिमयं श्रीचक्रं ~~ब्ब~~ ब्रह्मरन्ध्रे पितृरूपा
कुरुकुल्लाचलि देवता, माता पुरुषार्था: सागरा:
देहो नवरत्ने द्वीप: आधार नवक मुद्रा: शक्तय:
त्वगादि सप्तधातुभिरनेकै:, सप्तयुक्त सङ्ख्या : कल्पतरव:
तेज : कल्पकोद्यानं रसनया भासमाना, मधुरास्तिक्त
तिक्त कटु कषाय लवण रसा: षड्सा : क्रिया शक्ति
पीठ कुण्डलिनी ज्ञान शक्ति अहम् इच्छाशक्ति
महा त्रिपुरसुन्दरी ज्ञाता होता ज्ञानमर्घ्यं ज्ञेयं हवि:
ज्ञातृ ज्ञान ज्ञेया नमो मेऽभावं श्रीचक्रपूजनान्नियति
साहित भृङ्गाराद्यो नवरसा अणिमाद्यष्ट,
काम क्रोध लोभ मोह मदमात्सर्य पुण्य पापमया -
ब्राह्म्याद्याष्ट शक्तय:, आधार नवक मुद्रा शक्तय:
पृथ्व्यप्तेजो वाय्वाकाश, श्रोत्र त्वक चक्षुर्जिह्वा
घ्राण वाक पाणि पाद पायूपस्थ विकारा:
षोडश शक्तय: ~~वच~~ वचनादान गमन विसर्गा -
नन्दादानोपादानोपेक्षानुद्वेगो, अनङ्ग कुसुमादि
शक्तयोष्टौ, अलम्बुषा कुहु विश्वोदरी वरुणाहस्ति
जिह्वायशस्विनी गान्धारी पूषा सरस्वती,
इडा पिङ्गला सुषुम्नाचेति, चतुर्दश नाड्य:,
सर्व संक्षोभिण्यादि चतुर्दशार देवता :,
प्राणापानव्यानोदान समान, नाग कूर्म्म कृकल -
देवदत्त धनञ्जया दशवायव: सर्वसिद्धिप्रदादि
बहिर्दशार देवता:

एतद्वायुदशक संसर्गोपाधि भेदेन
रेचक पूरक पोषक दाहकाल्पावकामृतामिति
प्राणसरव्यत्वेन पञ्चविधास्ति.
जाठराग्नि र्मनुष्याणान्नोहको भक्ष्यभोज्य
लेह्य चोष्यात्मक चतुर्विधमन्नम्पाचयति
तदाकाशवान सकलाः सर्व्वज्ञत्वाद्यन्तर्दुशार
देवताः

शीतोष्णा सुख दुःखेच्छा सत्त्व रजस्तमोगुणा.
दि वशिन्यादि शक्तयोष्टौ शब्द सपर्शी रूप
रस गन्धाः । पञ्चतन्मात्राः पञ्च पुष्पबाणाः
मनेक्षुधनुर्व्वल्यो बाणोरागः पाशो द्वेषो
अङ्कुशो ऽव्यक्त महत्तत्त्वाहङ्कार
कामेश्वरी, वज्रश्वरी, भगमालिन्या ऽ
अन्तस्त्रिकोणगा देवता ः

पञ्चदशनित्या, शुद्धानुरूपाधिदेवता निरूपाधि
सार्व्वदेव कामेश्वरी सदानन्दपूर्णाः
स्वात्मैक्य रूप ललिता कामेश्वरी सदानन्दघन
पूर्णाः स्वात्मैक्य रूपा देवता ललितामिति
साहित्यकरणं सत्त्वं कर्त्तव्यम,कर्त्तव्यमिति
भावनामुक्ता उपचाराअहन्त्वमस्ति

नास्तिकर्त्तव्या कर्त्तव्यमुपासित व्यानुपासितव्यमिति विकल्पनामनो विलापनं होमः

बाह्याभ्यन्तर करणानां स्वरूपग्रहण योग्यत्वास्तीर्त्या वाहनम्

तस्य बाह्याभ्यन्तर करणानामेकरूप विषय ग्रहणम्

आसनम्

रक्त शुक्ल पदैक किरणम्पाद्यम् उज्ज्वल दामोदानन्दासानन्दनम अर्घ्यम्

स्वच्छा स्वतः शक्तिरित्याचमनम्

चिद्रूपमयी स्नानम्

विदग्नि स्वरूप परमानन्द शक्ति स्मरणँ वस्त्रम्

प्रत्येकं सप्तविंशति धामिन्नत्वेन इच्छा क्रियात्मक ब्रह्म ग्रन्थिमयीसतन्तु ब्रह्म नाडी ब्रह्म सूत्रम्

व्यातिरिक्तनस्त्रासङ्ग रहितस्मरणँ विभोषणम्

स्वच्छन्द परिपूर्ण्ण स्मरणङ्गन्धः
समस्ततिषयाणाम्मनः स्थैर्य्यणानु सन्धानङ्कुसुमन्ते षामेव सर्व्वदा स्वीकरणन्धूपः

पवनाछिन्नो दूर्ज्वरेला सच्चिदाह्लादाकाशदेहो दीपः
समस्तयातायातिवर्ज्जनं नैवेद्यम्
अवस्थात्रयैकीकरणन्ताम्बूलम्
मूलाधारादाब्रह्मरन्ध्रपर्य्यंतं ब्रह्मरन्ध्रादामूलधार
पर्य्यन्तङ्गतागतरूपेण प्रादक्षिण्यन्तुरीयावस्थानं
संस्कारदेह, शून्य, प्रमादितावति, मज्ञानम्बलिहरणं
सत्त्वमास्ति, कर्त्तव्यमकर्त्तव्य, मौदासीनयमात्म
विलापन होमः

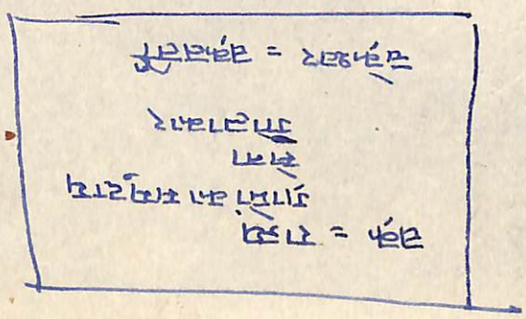

भावनाविषयाणाम, भेदभावनातर्पणम्
स्वयन्तत्पादुका निमज्ज्ञानम्परिपूर्ण ध्यानम्
एवम्मूर्त्ति ~~नयम~~ त्रयम्भावनयायुक्तो मुक्तो भवति
तस्य देवतात्मैक्य सिद्धिः
त्रितिकार्य्याण्य प्रयत्नेन सिद्ध्यन्ति
स एव शिवयोगीति कथ्यते ॥